nks o"khZ; ch.,M. dk;Øe % ,d fo'ys"k.k

डॉ. नरेन्द्र कुमार पाठक

'kks/k lkj

वैश्वीकरण के इस युग में गुणवत्तापरक शिक्षा हम सभी के लिये एक बडी चिन्ता का विषय है। वे सभी कारक जो गुणवत्तापरक शिक्षा को प्रभावित करते हैं उनमें कहीं न कहीं शिक्षक की गुणवत्ता मुख्य रूप में शामिल है। वास्तव में कोई भी नवीनता या शिक्षा के क्षेत्र में कोई भी परिवर्तन शिक्षा की गुणवत्ता में तब तक सुधार नहीं ला सकता जब तक की उसके पास गुणवत्तापूर्ण शिक्षक न हो। अध्यापन के क्षेत्र में उच्च गुणवत्ता वाले लोगों की पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित करने तथा उन्हें एक अच्छा सम्भव पेशेवर शिक्षक तैयार करने के साथ, उपलब्ध कराने की तुलना से अधिक महत्वपूर्ण है। गुणवत्ता शिक्षक का आशय ऐसे शिक्षकों से है जो कि विषयों के विशेषज्ञ होने के साथ–साथ विभिन्न प्रकार की शिक्षण विधियों को अपनाने की क्षमता एवं सीखने वाले की समस्याओं को समझने की क्षमता रखते हो। इस सन्दर्भ में सेवापूर्व शिक्षक शिक्षा जो कि अध्यापक शिक्षा का एक प्रमुख अंग है बहुत महत्व रखता है। सेवापूर्व शिक्षक शिक्षा में हम मुख्यतः बी.एड. की बात करते हैं तथा आज के समय में इसकी प्रशिक्षण अवधि एक विवादास्पद विषय है। कुछ का तर्क है कि यह अवधि एक वर्ष के लिये होनी चाहिये जबकि कुछ शिक्षाविद् इस अवधि को दो वर्ष का रखने के पक्ष में है। जहां प्रशिक्षण अवधि दो वर्ष के करने के कुछ आधारभूत लाभ हैं वहीं दूसरी ओर कुछ सामाजिक एवं आर्थिक नुकसान भी हैं। इस प्रकार प्रशिक्षण अवधि के पक्ष और विपक्ष दोनों में ही कुछ महत्वपूर्ण विचार रखे जा सकते हैं।

1. Hkfedk

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात जिस प्रकार शिक्षा के विकास हेतु समय समय पर विभिन्न प्रकार की समितियों का गठन किया गया एंव उसकी सिफारिशों को लागू किया गया उससे शिक्षा में काफी सुधार हुआ है। जहॉ तक अध्यापक शिक्षा का सवाल है उसको लेकर भी विभिन्न आयोगों एवं समितियों ने समय समय पर सुधार के उपाय दिये है। अध्यापक शिक्षा में शिक्षण –प्रशिक्षण अवधि स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात सदैव विवादास्पद रही है। किसी आयोग ने इसे 1 वर्ष तथा किसी आयोग ने इसे 2 वर्ष रखने की सिफारिश की है। क्योंकि यदि शिक्षण –प्रशिक्षण अवधि 2 वर्ष की होगी तव प्रशिक्षु शिक्षक. शिक्षण से सम्बन्धित प्रत्येक पहलुओं को समझेगा एवं जानेगा तथा शिक्षा की गुणवत्ता में तभी सुधार हो सकता है जब आपके पास उच्च गुणवत्ता पूर्ण शिक्षक हों। वास्तव में शिक्षण–प्रशिक्षण का मुख्य उददेश्य शिक्षा के दर्शन को समझने के लिए सक्षम करने मार्गदर्शन एंव परामर्श के कौशल का विकास करने. शैक्षिक सामग्री के रूप में समुदाय के संसाधनों का उपयोग करने. संचार कौशल का विकास करने. तथा आधुनिक सूचना प्रौद्यौगिकी का उपयोग करमे के लिए सक्षम बनाना होता है।

2. if'k{k.k vof/k nks o"kZ dk i{k esa

1. 1998 में NCTE ने बी.एड/एम.एड हेतु दिये गये विशेष उद्देश्य बहुत व्यापक है। जो कि एक वर्ष की अवधि में पूर्ण होना सम्भवं नही है।

2. उदीयमान भारतीय समाज के अन्तर्गत मूल्य शिक्षा व्यवसायिक शिक्षा, पर्यावरण शिक्षा आदि को एक वर्ष के भीतर सुचारू रूप से पढ़ाया नही जा सकता क्योंकि इनके क्षेत्र बहुत व्यापक है। जो कि एक वर्ष की अवधि में पूर्ण होना सम्भवं नही है।
3. प्रौद्यौगिकी के इस युग में सूचना एवं संचार प्रौद्यौगिकी शिक्षा का एक प्रमुख अंग बन रहा है। कई विश्वविद्यालयों में यह अनिवार्य पाठयक्रम के रूप में जुड़ा है। अतः इनकी केवल जानकारी देना ही पर्याप्त नही होगा बल्कि भावी शिक्षको को शिक्षण अधिगम प्रक्रिया से इन बातों को एकीकृत करने के लिए एक वर्ष की अवधि पर्याप्त नही होगी।
4. सूक्ष्म शिक्षण एवं अभ्यास शिक्षण हेतु पर्याप्त समय होना चाहिए जिससे शिक्षक अपने प्रर्दशन में सुधार करके भावी शिक्षकों के लिए पर्याप्त प्रतिक्रिया दे सकें।
5. शिक्षण प्रशिक्षण का एक महत्वपूर्ण घटक इन्र्टनशिप है। लेकिन समय की कमी के कारण इस पर ध्यान नही दिया जाता। NCTE ने बी.एड/एम.एड. हेतु इसे कम से कम तीन महीने का करने की सिफारिश की गयी है जो कि एक वर्ष की अवधि में पूर्ण होना सम्भव नही है। इसलिए शिक्षण प्रशिक्षण अवधि दो वर्ष की होना चाहिए।
6. प्रशिक्षण अवधि दो वर्ष का होने से प्रशिक्षु शिक्षक के व्यक्तित्व में समग्र विकास होता है। क्योंकि वह सांस्कृतिक कार्य, सामुदायिक कार्य, शैक्षणिक भ्रमण, इत्यादि गतिविधियों में लिप्त रहता है जोकि प्रशिक्षु शिक्षक को एक उच्च गुणवत्ता पूर्ण शिक्षक बनने में मजबूत आधार प्रदान करेगा।
7. दो वर्षीय कार्यक्रम में सेमेस्टर प्रणाली लागू होने से इनका मुल्याकंन भी समय–समय पर होना रहेगा तभी वे अपनी कमियों को पूरा कर पायेगें।

3. if'k{k.k vof/k ,d o"kZ dk i{k e

1. भारतवर्ष की शिक्षा व्यवस्था में बी.एड/एम.एड की शिक्षा प्राप्त करने के लिए कम से कम स्नातक होना अनिवार्य है। प्रशिक्षण अवधि बढ़ाने से जहॉ एक ओर शैक्षणिक वर्ष बढ़ता है वही दूसरी ओर रोजगार के अवसर कम हो जाते है।
2. शैक्षणिक वर्ष दो वर्षीय होने से लागत भी अधिक आती है। चूकिं ये एक पेशेवर डिग्री है। इसलिए मेधावी छात्र इससे विमुख होने लगेगें।
3. जहॉ भारत वर्ष में लाखों बेरोजगार है वही शिक्षक की नौकरी पाने का यह आसान एवं अनिवार्य पाठ्यक्रम है। बी.एड/एम.एड शैक्षणिक वर्ष दो वर्षीय होने से लोगो का आकर्षण कम होगा।
4. भारत में आज भी लाखों पढे लिखे लोग बेरोजगार है वे बी.एड/एम.एड को सुरक्षित भविष्य का साधन मानते है। प्रशिक्षण अवधि बढ़ने से यह लागत बनाम् गुणवत्ता के बीच द्वंद है।
5. प्रशिक्षण अवधि बढ़ने से शैक्षणिक वर्ष में बढोत्तरी होती है यह 10+2+3+2+2 = 19 वर्ष होगी जबकि आज लोग जल्द से जल्द नौकरी पाना चाहते है।

4. fu"d"kZ

आज शिक्षा के क्षेत्र में भारत की स्थिति अत्यन्त दयनीय है। विश्व के उच्च 200 विश्वविद्यालयों में भारत के किसी विश्वविद्यालय का नाम नही हैं यदि भारत में शिक्षा का स्तर सुधारना है तब कहीं का कहीं गुणवत्ता परख शिक्षा व उच्चगुणवत्तापूर्ण शिक्षक की आवश्यकता होगी। प्रशिक्षण अवधि दो वर्ष का होने से प्रशिक्षु शिक्षक के व्यक्तित्व में समग्र विकास होता है। क्योंकि वह सांस्कृतिक कार्य, सामुदायिक कार्य, शैक्षणिक भ्रमण, इत्यादि गतिविधियों में लिप्त रहता है तथा सूक्ष्म शिक्षण एवं अभ्यास शिक्षण हेतु पर्याप्त समय मिलता है। प्रशिक्षण अवधि दो वर्ष का होने से प्रशिक्षु शिक्षक को भारतीय समाज के अन्तर्गत मूल्य शिक्षा

व्यवसायिक शिक्षा, पर्यावरण शिक्षा आदि के बारे में जानकारी मिलती है जोकि एक उच्च गुणवत्ता पूर्ण शिक्षक बनने में मजबूत आधार प्रदान करेगा।

आजादी के बाद निश्चित ही भारत की साक्षरता दर बढ़ी है। किन्तु आज उसकी शैक्षणिक गुणवत्ता में लगातार गिरावट हो रही है। इसके लिए कहीं न कहीं शिक्षक जिम्मेदार है। भारत में अध्यापक शिक्षा को और बेहतर बनाने के लिए NCTE द्वारा सुझाये गये बिन्दुओं पर ध्यान देना होगा तथा शिक्षा जगत में व्याप्त भ्रष्टाचार को खत्म कर एक आर्दश शिक्षा व्यवस्था एंव एक आर्दश शिक्षक तैयार करना होगा तभी भारत का भविष्य सुरक्षित होगा क्योंकि शिक्षक ही राष्ट्र निर्माता होता है।

lUnHkZ xzUFk lwph

1. Bhattacharjee, D.K. (1999). 'Emerging Paradigms of 2years B.Ed. Programme'.University News, 37(36) .6-7.
2. Committee on Emotional Integration, (1961). In Walia, K., & Rajput, J.S. (1999). 'Extended Duration for B.Ed. Program'. University News, 37(19). 11
3. Curriculum Framework for Quality Teacher Education, (1998).
4. Goel, C., & Goel, D.R. (1999-2000). Two-Year B.Ed.: Need and Feasibility. Strengthening School Education (School Education and Teacher Education). pp. 107-112. Vadodara: CASE, Faculty of Education and Psychology, The Maharaja Sayajirao University of Baroda.
5. Gupta, M., Kakaria, V.K., & Chugtai, I.B. (2002). 'Two-year B.Ed. Programme: An Experiment in Quality Teacher Education'. University News, 40(45). 1-5
6. http://www.ncte-in.org/pub/curr_0.htm
7. National Commission on Teacher-I (1983-85). In Walia, K., & Rajput, J.S. (1999). 'Extended Duration for B.Ed. Program'. University News, 37(19). 11-15.
8. NCTE, (1998). Policy Perspectives in Teacher Education: Critique and Document, New Delhi: NCTE.
9. Pradhan, N. (2001-2002). Flexibility and Quality In Teacher Education.Perspectives in Education. pp. 230-232. Vadodara: CASE, Faculty of Education and Psychology, The Maharaja Sayajirao University of Baroda.
10. Seventh General Body metting of NCTE, (1983). In NCTE, (1998). Policy Perspectives in Teacher Education: Critique and Document, New Delhi: NCTE.
11. Walia, K., & Rajput, J.S. (1999). 'Extended Duration for B.Ed. Program'. University News, 37(19). 11-15.